भारत के प्राचीन वृक्ष

डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का

देश की प्राचीन हरित धरोहर को संरक्षित करना काफी ज़रूरी है। परंतु दुखद पहलू यह है कि देश के प्राचीन वृक्षों को सूचीबद्ध करने, उनका इतिहास एकत्र करने एवं उन्हें संरक्षण प्रदान करने हेतु कोई अलग से विभाग या एजेंसी नहीं है।

देश में प्राचीन वृक्षों का कोई व्यवस्थित एवं प्रामाणिक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। ज़्यादातर रिकॉर्ड पुराने लोगों के कथन पर आधारित हैं। वनस्पति विज्ञानी या वन विभाग के किसी अधिकारी ने व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा कोई अधिकृत जानकारी एकत्र नहीं की है। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. वीरेंद्र कुमार एवं भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के डॉ.एस.एस. राव ने इस संदर्भ में कुछ कार्य किया था। समय-समय पर विभिन्न समाचार पत्रों में वृक्षों के सम्बंध में प्रकाशित समाचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि देश में 5000 से लेकर 100 वर्ष की उम्र के पेड़ उपस्थित हैं।

देश का सम्भवतः सबसे प्राचीन वृक्ष मुज़फ्फरनगर (उ.प्र.) के पास स्थित प्रसिद्ध तीर्थ स्थल शुक्रताल में लगा वह वृक्ष है जिसकी उम्र वहां के लोग 5000 वर्ष के आसपास बताते हैं। एक किंवदंती के अनुसार इस वृक्ष के नीचे बैठकर महाराज शुक्रदेव ने राजा परीक्षित को भगवत कथा सुनाई थी। शुक्रदेव आश्रम सेवा समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तिका *शुक्रतीर्थ संक्षिप्त परिचय* में भी उक्त किंवदंती की पुष्टि की गई है।

तीन हज़ार वर्ष से अधिक उम्र के भी दो वृक्ष आज भी जीवित हैं। 3500 वर्ष पुराना एक आम का वृक्ष मद्रास से लगभग 70-75 किलोमीटर दूर मद्रास-बैंगलोर मार्ग पर कांचीपुरम ज़िले के चिंगलपेट में एक मंदिर के अहाते में लगा है। यह मंदिर एकाम्बरेश्वर के नाम से जाना जाता है। इस आम वृक्ष की विशेषता यह है कि इसकी चारों शाखाओं पर चार अलग-अलग स्वाद के फल लगते हैं। 1980 के आसपास पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के कुछ वनस्पति वैज्ञानिकों ने यहां आकर इस पेड़ का अध्ययन किया था।

इसी प्रकार इलाहाबाद में संगम के किनारे बाओबाब (मांडव की इमली) का एक विशाल पेड़ है जिसका व्यास 6 मीटर है। वैज्ञानिक प्रो. एंडसन के अनुसार यह 3200 वर्ष पुराना है। इस वृक्ष का ज़िक्र 1350 वर्ष पूर्व चीनी यात्री व्हेनसांग ने भी किया है।

एक हज़ार वर्ष से अधिक उम्र वाले वृक्षों की गणना में प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बद्रीनाथ के पास जोशीमठ में लगा एक शहतूत वंश का वृक्ष *मोरस सेराटा* है जिसकी उम्र 1200 वर्ष के आसपास आंकी गई है। बताया जाता है कि आदि शंकराचार्य ने इसी वृक्ष के नीचे समाधि ली थी।

साल (*शोरीयर रोबस्टा*) का एक हज़ार वर्ष की आयु वाला एक पेड़ छत्तीसगढ़ में कोरबा से 25 किलोमीटर दूर स्थित गांव मातभार में देखा गया है। इस प्राचीन वृक्ष की जानकारी स्थानीय वन विभाग को 2006 में मिली थी। 300 की आबादी वाले इस छोटे से गांव में सितंबर 2006 में कुछ हाथियों ने आक्रमण किया था। बचाव कार्य के लिए आए वन अधिकारियों ने इस वृक्ष को देखा एवं इसकी जानकारी एकत्र की थी। साल के इस पेड़ की ऊंचाई 25 मीटर एवं मोटाई 19 फीट है।

बिहार में बोधगया का प्राचीन मूल बोधि वृक्ष (पीपल) तो नष्ट हो गया परंतु अब जिसे बोधि वृक्ष माना जा रहा है उसकी कलम श्रीलंका से यहां लाकर लगाई गई थी।

यह भी 900 वर्ष पुराना है। हैदराबाद के नजदीक स्थित प्रसिद्ध गोलकुंडा किले के अंदर बाओबाब का एक 700 वर्ष पुराना पेड़ लगा है जिसके तने ने लगभग 95 वर्ग फीट ज़मीन घेर रखी है। इस विशाल वृक्ष में 60 प्रकार के पक्षी भी निवास करते हैं।

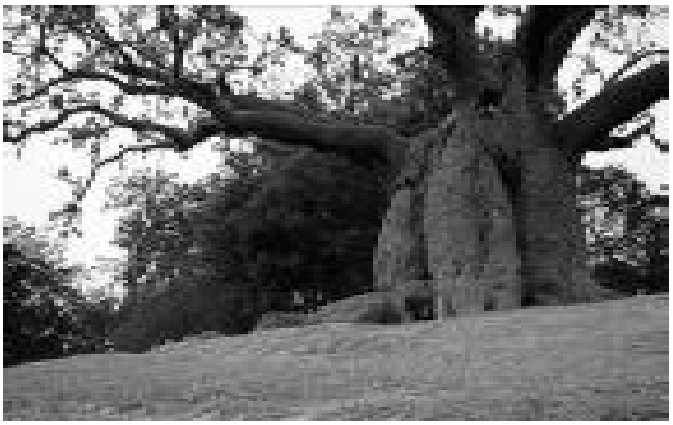

जम्मू-काश्मीर के बड़गाम ज़िले के छत्तरगाम में एक बगीचे में लगभग 650 वर्ष उम्र का चिनार (*प्लेटेनस ओरिएंटेलिस*) का पेड़ लगा है जिसे मशहूर सूफी संत सैयद अब्दुल कासिमशाह हमदानी ने लगाया था। तने का घेरा करीब 30 मीटर है।

आंध्रप्रदेश के अनंतपुर ज़िले के गूटी गांव में दो हैक्टेयर में एक बरगद का पेड़ फैला है जिसकी उम्र 500 वर्ष के लगभग बताई गई है। स्थानीय लोग इस प्राचीन पेड़ को थिमा मनी मेरू कहते हैं।

मद्रास एवं गुजरात में 400 वर्ष पुराना वट एवं बेर का वृक्ष भी रोचक जानकारियां समेटे है।

मद्रास में थियोसाफिकल सोसायटी, अड्यार के परिसर में लगा 400 वर्ष पुराना वट वृक्ष 1989 में आए भारी तूफान के कारण धराशायी हो गया था। बाद में रेल्वे, सेना एवं बंदरगाह कर्मचारियों की मदद से इसे खड़ा किया गया था। लगभग 8 टन भारी इस वृक्ष को उठाने में 20 टन वज़न वाली क्रेन का उपयोग किया गया था। 40,000 वर्ग फीट में फैले इस वृक्ष को रवींद्रनाथ टेगौर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, डॉ. राजेंद्र प्रसाद एवं श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी देखा था।

गुजरात के ज़फराबाद में राजाभाई अलाभाई के अहाते में लगा एक बेर का पेड़ बगैर कांटेवाला है। इसकी ऊंचाई 15 मीटर तथा घेरा 19 मीटर है। इस पेड़ में एक बार में 600 किलो तक फल लगते हैं। राजाभाई के पूर्वजों ने इसे लगाया था जो लुहारी का धंधा करते थे। इन पूर्वजों को अरब देश से आए किसी व्यापारी ने इसका रोपा प्रदान किया था।

एक 300 वर्ष पुराना कटहल का पेड़ बेंगलौर के पास काचाहारी गांव में हाल ही में देखा गया है जिसे कर्नाटक सरकार धरोहर के रूप में संरक्षित करने पर विचार कर रही है।

केरल के परम्बीकुलम स्थान पर भी वन विभाग ने एक 300 वर्ष पुराना सागौन का वृक्ष खोजा है जिसकी उंचाई 47 मीटर एवं गोलाई लगभग 7 मीटर है।

200 वर्ष उम्र के कई वृक्ष देखे गए हैं। इनमें प्रमुख है कलकत्ता के भारतीय वनस्पति उद्यान में लगा विशाल वट वृक्ष। पश्चिमी बंगाल में ही नादिया ज़िले के कृष्णनगर से 80 कि.मी. दूर गांव अम्बरपुर में भी 200 वर्ष पुराना वट वृक्ष है। 17 एकड़ भूमि में फैले इस वृक्ष में 300 लटकती जड़ें तथा 140 शाखाएं हैं। जम्मू-काश्मीर के बड़गाम ज़िले के सोईबाग गांव में चिनार का एक 200 वर्ष पुराना पेड़ है। इस पेड़ की एक ओर विशेषता यह है कि इस पर 100 वर्ष से पुराना एक घर भी बड़े व्यवस्थित ढंग से बना है। गुजरात में कबीर बड़ एवं नीम भी 200 वर्ष की उम्र के देखे गए हैं। कबीर बड़ के नाम से प्रसिद्ध वट वृक्ष भरूच से 22 कि.मी. दूर स्थित है। एक किंवदंती के अनुसार संत कबीर जिस बड़ की डाली से दातून करते थे उसी से यह बना है। मेहरता ज़िले के लुणवा गांव में नीम का भी 200 वर्ष पुराना पेड़ है जिसकी लंबाई 18 मीटर तथा तने की गोलाई पांच मीटर है।

100 वर्ष से अधिक उम्र के तो कई पेड़ होंगे परंतु हाल ही में रायसेन (मध्य प्रदेश) से 25 कि.मी. दूर साल

के लगभग 75 पेड़ ऐसे देखे गए हैं जिनकी उम्र, तने की गोलाई चार फीट के आधार पर, 125 वर्ष से अधिक आंकी गई है।

जैव विविधता संरक्षण के समय में देश की इस प्राचीन हरित धरोहर को संरक्षित करना काफी ज़रूरी है। परंतु एक दुखद पहलू यह भी है कि देश के प्राचीन वृक्षों को सूचीबद्ध करने, उनका इतिहास एकत्र करने एवं उन्हें संरक्षण प्रदान करने हेतु कोई अलग से विभाग या एजेंसी नहीं है। जैसे देश में प्राचीन इमारतों के संरक्षण एवं रख रखाव हेतु पुरातत्व विभाग है ठीक उसी प्रकार प्राचीन वृक्षों के लिए भी कोई पृथक विभाग आवश्यक है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 की 150वीं जयंती देश भर में मनाई जा रही है। इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कई लोगों को अंग्रेज़ों द्वारा वृक्षों पर लटकाकर फांसी दी गई थी। कई प्राचीन पेड़ उस शहादत के मौन साक्षी हैं। अतः उनकी जानकारी एकत्र की जानी चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***